254
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1320/1021

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 254

"Bhagat Singh" in Hindi, Govt of the U.P. Rno. 255 d/ 14.2.40.
Imperial Record Department

भगतसिंह

आज़माइश है कड़ी, लब पर कोई शिकवा न हो।
फिर मिलेंगे है यक़ीं, दिल में कोई धड़का न हो॥
फिर जहां में जन्म लेंगे, हम ग़रीबाने वतन।
हम बनेंगे बाग़बां अपना तुही होगा चमन॥

321/79

891.431
P192 B

भगत सिंह

—— ❀ ⁘ ❀ ——

लेखकः—

by Pt Harsh Dutt Pandey (Shyam)

पं० हर्षदत्त पाण्डेय (श्याम)

एच० एम० एम० एस० बी० कानपुर ।

प्रकाशकः—

बम्बई पुस्तकालय,

जगदीश ग्रन्थमाला कार्यालय

चौक, कानपुर ।

द्वितीयबार ५०००] सम्वत् १९९६ वि० [मूल्य ।)

पं० रामेश्वर प्रसाद पाण्डेय, द्वारा,
"सुरसरि प्रेस" चूड़ी मुहाल, कानपुर में मुद्रित।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 254
Date 6.12.71
GOVT. OF INDIA

* बन्देमातरम् *

भगतसिंह

* दोहा *

जै भारत जै भारती जै २ जयति स्वदेश ॥
जहाँ जन्म धारण करें बार बार सर्वेश ॥

(१)

तुझ पर ही राम हुए पैदा तैंने ही कृष्ण बनाये थे ।
राणा प्रताप राणा कुम्भा से धीर वीर प्रकटाये थे ॥
सूरमा शिवा से रण पुङ्गव मातायें झाँसी वाली सी ।
रणचण्डी दुर्गा महां कालिका अरि मर्दन मतवाली सी ॥

(२)

नाना ऐसे भारत रक्षक और कुमरसिंह से ज्वानों को ।
देवी स्वतन्त्रता के प्रेमी आज़ादी के दीवानों को ॥
और जाने कितने ऐसे ही माँ तैंने वीर बनाये थे ।
तेरी ही मिट्टी में पल कर जो जग में वीर कहाये थे ॥

(३)

तेरा ही खाया धान्य तुझी पर इल्म उन्होंने पाये थे।
और मेहरबानियों से तेरी ही इतने नाम कमाये थे॥
माता तो कुल दो चार वर्ष ही हमको लाड़ लड़ाती है।
लेकिन तू आदि से अन्त तलक गोदी में हमें सुलाती है॥

(४)

पैदा होते ही पहले हम तेरी गोदी में आये थे।
माँ ने पीछे पुचकारा पहले तैंने लाड़ लड़ाये थे॥
मर गये तो कहने लगे स्वजन जल्दी से इसको पार करो।
गाड़ दो जला दो या फेंको या किसी तरह बेकार करो॥

(५)

फिर भी तैंने ना दूर किया छाती में रखा छिपा करके।
कर लिया जज्ब अपने ही में हमकोभी खाकत्रना करके॥
अब बोल तेरे अहसानों को हम कैसे भूल सकें माता।
जन्मदा बुद्धिदा सर्व सौख्यदा सुखदा शुभवर की दाता॥

* दोहा *

भारत के इतिहास के उत्तम और उत्कृष्ट।
लिखूं रुचिर मन यथा कुछ मति थोड़े से पृष्ठ॥

(६)

सतलज, झेलम, रावी, चुनाव और व्यास आदि के स्थल में।
पंजाब प्रान्त बसता है मित्र भारत माँ के हृदयस्थल में।।
लायलपुर उसी इलाके में मशहूर जिला कहलाता है।
बस उसी जगह की दास्तान यह खाकसार बतलाता है।।

(७)

श्री अर्जुनसिंह सरदार यहीं रहते थे मय अहवाबों के।
था चैन अमन हर तरह किया करते थे काम सबाबों के।।
लाखों की दौलत घर में थी ज़मीदार नामी घर था।
और जिक्र सखावत का उनकी हर जगह चारसू दर २ था।।

(८)

थे तीन पुत्र आज्ञाकारी तन मन से सेवा करते थे।
थे मात्र भूमि के वीरप्रसू आज़ादी का दम भरते थे।।
सर्दार अजीतसिंह स्वर्णसिंह और किसनसिंह कहलाते थे।
और इन्हीं नामों को लेकर वह वीर पुकारे जाते थे।।

(९)

देश की भलाई का करते सब काम लगाकर तन मन धन।
जेल की हवा भी खा आये वे वीरप्रसू थे छोड़ सदन।।
सरदार स्वर्णसिंह तो बन्दीगृह से ही स्वर्ग सिधारे थे।
आज़ादी के दीवाने थे सच्चे रहनुमां हमारे थे।।

* दोहा *

उन्हीं दिनोंकी है सुजन यह सुखदायक बात ।
अक्टूबर का माह था सन् उन्नीस सौ सात ॥
किशनसिंह के घर लिया भगतसिंह औतार ।
कुटिल कुशासन को दलन करन मात्र उद्धार ॥

(१०)

इस तरह लगा बढ़ने बालक ज्यों इन्दु शुक्ल में बढ़ता है।
इस तरह लगा चढ़ने नितप्रति ज्यों सूर्य व्योम में चढ़ता है॥
अतएव पढ़ने का समय हुआ शिक्षा दी जाने लगी उन्हें।
और तींव्र बुद्धि लखकर करते थे प्यार बन्धुवर सभी उन्हें॥

(११)

कुछ दिन में प्रारम्भिक शिक्षा उस दानिशवर ने थी पाली।
फिर ज्यादा शिक्षाहित भरती डी. ए. बी. मेंथी करवाली॥
दो और क्षात्र भी इसी जगह इनके संग शिक्षा पाते थे ।
सुखदेव और यशपाल नाम से जो कि पुकारे जाते थे ॥

(१२)

मित्रता का रिस्ता उनसे ही श्री भगतसिंह ने डाला था ।
और आजादी का प्रेम यों कहो इन्ही दिनो से पाला था॥
थी उम्र वर्ष चौदह की कुल अरमान दिलों में भारी थे ।
और धीर वीर गम्भीर आप क्रांतीय यज्ञ के कारी थे ॥

(१३)

ज़िम्मेदारी वाले कामों को सदा ध्यान से करते थे।
अच्छा गुण जो पा जाते थे वह हृदयस्थल में धरते थे॥
था इन्हीं दिनों पंजाब प्रान्त में एक नया ही दल कायम।
बब्बर आकाली नाम से वह कायम मुकाम था दायम॥

(१४)

चल दिये उसी रस्ते ये भी और उनको ही ले साथ लिया।
क्रान्ति की तरक्की के कामों में काफी इनने हाथ लिया॥
पर कितने दिन तक ये बातें नौकरशाही से छिप पातीं।
ये कैसे मुमकिन हो सकता है बात दबी ही रह जाती॥

(१५)

कहने का मतलब येकि पुलिस इन सब बातों को जानगई।
हर एक क्रांति के नेता को वह सभी तरह पहचान गई॥
गिन गिन कर एकएक को वह पिंजरे में बन्द कराती थी।
इन मद उनमत्त परन्दों को सिकचों के बीच सड़ाती थी॥

(१६)

अतएव भगतसिंह भी उसकी आँखों का बना निशाना था।
और इसी तरद्दुद में रहता वह शेर बबर मरदाना था॥
लाचार छोड़ पंजाब दिया और बसा कानपुर में आकर।
मैत्री गणेशशंकर से ली कर उसने दिल में हर्षा कर॥

(१७)

थे अरमानों के दिल उनके थी देशभक्ति की लगन लगी।
और साधन पाकर दीप शिखा अनखंड रूप से जलन लगी॥
काफी दिन ऐसे काम चला नित नये संगठन होते थे।
भ्रम में पड़ कर तुरुमये क्रान्ति की इत उत फिरते बोते थे॥

(१८)

फिर एक रोज यह भी आया गांधी के सभी उपासक थे।
और अपने दिल की क्रांति ब्रत्तिके अहिंसात्मक शाशक थे॥
घर घर में मचा आन्दोलन सब बाल वृद्धि दीवाने थे।
और अहिंसात्मक रह खाते लाठी डण्डे मस्ताने थे॥

* दोहा *

पर कुछ दिन में होगया असहयोग था बन्द।
उठी क्राँति की फिर वहां मित्र जमातें चन्द॥
उन्हीं दिनों श्रीभगतसिंह हुये क्रांति के साथ।
यानी पहली दफा डाला उसमें हाथ॥

(१९)

उनकी भी जमातों ने मिलकर दल अपना एक बना डाला।
दी हिन्दोस्तान रिपब्लिक आर्मी नाम मित्र उसका डाला॥
इसमें ही भरती हुये भगतसिंह ने अपना नाम लिखाया था।
और गुप्त नाम अपना उनने (बलवन्त) दोस्त रखवाया था॥

(२०)

बिस्मिल आज़ाद आदि के संग सब काम खुशी से करते थे।
नित नये नये नवयुवक देश से छांट छांट दल भरते थे ॥
पत्रों में लिखने लगे लेख अपने अनुभव बतलाते थे।
अपने बीते हालात भारतीयों को वह जतलाते थे ॥

(२१)

काकोरी काण्ड उन्हीं दिवसों सूबये हिन्द में हुआ सुजन।
गाड़ी से लूटा था युवकों ने ब्रिटिश गवर्नमेंट का धन ॥
कितनी ही हुई गिरफ्तारी थी सजा बहुत सों ने पाई।
रोशन अस्फाक लाहिड़ी बिस्मिल ने मित्रो फांसी पाई ॥

(२२)

पर शेर भगतसिंह चला गया लाहौर न पंजे में आया।
नेशनल कालेज लाहौरमें जाकर नाम बीरवर लिखवाया ॥
अध्ययन इतिहास राजनीतिका और अर्थशास्त्रका करतेथे।
भगवती चरण सुखदेव के संग में कोष बुद्धि का भरते थे॥

(२३)

सर्वेण्टस् आफ दी पीपुल सोसइटी इनकी इच्छा भरतीथी।
इनकी ही लेक्चर के सलाह पुस्तक का संग्रह करती थी ॥
डी. डी लायब्रेरी में सारी वह पुस्तक रक्खी जाती थीं।
चायकोब्स क्रापटकिन आदि की तरह सारेकाम चलातीथीं

(२४)

उत्सुकत्ता और लगन के संग ये उनका अध्ययन करतेथे।
दुनियां की सारी क्रान्ती का अनुभव दिमाग में भरतेथे।।
नेशनल कालेज की लायब्रेरी भी इनसे शोभा पाती थी।
मुल्क की भलाई करती थी युवकों को राह बताती थी।।

(२५)

साक्षात परिश्रम भी इनके संग्रह के परिश्रम से हारा।
पर देख नहीं सकता ये बढ़ती कभी आसमाँ हत्यारा।।
कई वार तलाशी हुई और यह मेहनत सब बेकार गई।
सारी पुस्तक श्रीमती पुलिस भारत की इन्हें डकार गई।।

(२६)

वे कार्यशील विद्यार्थी थे क्षमता व योग्यता रखते थे।
परिवर्तनकारी ग्रन्थ नित्यप्रति मँगा मँगाकर लखते थे।।
खाली पुस्तक के कीट न थे वह और काम भी करते थे।
युवकोंके संगठन हित इतउतनित भ्रमण किया हीकरते थे।।

(२७)

एक बार विचारा ककोरी के कैदी सभी छुड़ा लायें।
करके षड़यन्त्र जेल से उन युवको को यहां भगा लाये।।
करने दिल से कोशिशें लगे चिट्ठी भी आती जाती थी।
और नई नई तदबीरें इसके लिये लड़ाई जाती थी।।

(२८)

भण्डा फूटते दो बार बचा इनकी भी हिम्मत हार गई।
जब काम नहीं निकला कुछभीतो ख्वाहिश मनको मारगई ॥
काकोरी के केस से संघ गया था टूट।
दिल का भी सब हौसला गयाइसीसे टूट ॥

(२९)

पर दोस्तों की सलाह से फिर वह साजासाज।
हाथ बटाने संग हुये श्रीयुत सुखदेव राज ॥
युक्त प्रान्त पंजाब में फिर दल लिया बनाय।
सिन्हा विजयकुमार संग काम करें हर्षाय ॥

(३०)

यह बात साल छब्बिस की है! लाहौर में होताथा मेला।
भारत सम्राट रामका उसजगह था जाता अभिनयखेला ॥
बम किसी दुष्ट ने फेंक दिया था जलूस पर बदमाशी से।
जाने उसको क्या मिला निरपराधों की सत्यानाशी से ॥

(३१)

अभियोग लगा क्रांतिदलपर औ भगतसिंहको पकड़लिया।
वोर्सटलजेल के सिकचों में इस शेर बबरको बन्द किया ॥
जब भगतसिंह को बतलाया हत्या का मामला है तुमपर।
बम फेंकनेका रामसवारी परअभियोग लगा हैगा तुम पर ॥

(३२)

दरख़्वास्त जमानत की दी घरकों ने इनको छुड़वाने को ।
निरपराधी साबित करनेको इनको घरपर ले जाने आनेको ।।
मंजूर प्रार्थना तो करली पर साठ हजार मुचलके पर ।
इतना रुपया कर दिया जमा श्री किशनसिंह ने लड़के पर

(३३)

सङ्गठन कार्य स्थगित किया लाचार भगतसिंह ने होकर ।
और सार्वजनिक कार्यों में देने लगे योग पुलकित होकर ।।
नौ जवान भारत सभा के बने मेम्बर करने काम लगे ।
शान्ति के सिपाही बने करन आजादी का संग्राम लगे ।।

(३४)

ऐलान किया इस ही दल ने काकोरी दिवस मनाने का ।
कर कर के सभा हर जगह उनसे सङ्गठन मूर्ति दिखलानेका
मैजिक लैनटर्न के द्वारा ये अपनी स्पीच सुनाते थे ।
थे जान फूकते मुर्दों में घर घर सन्देश सुनाते थे ।।

(३५)

रहते थे भगवतीचरण संग वह ही स्पीचें देते थे ।
क्योंकि ये मुचलके के कारण बन्द कर जबां को रखतेथे ।।
युग था मज़दूर किसानों का पावक क्रांति सी जलतीथी ।
नौ जवान भारत सभा इसी उद्देश्य को लेकर चलतीथी ।।

(३६)

अध्ययन करने से इनके भी पड़ गया था फर्क विचारों में।
हो गया था परिवर्तन काफी इनके विचार आचारों में॥
विश्वास उठ गया क्रांतिवाद से मार्क्सवाद अपनाया था।
संगठन कार्य को अपना उनके सच्चा ध्येय बनाया था॥

(३७)

कटते ही जमानत फिर उनने क्राँति का मार्ग अपनाया था।
और विजयकुमार सिंह से मिलफिर चरखा वही चलायाथा
थोड़ी सी ही मेहनत से फिर दल कई होगये थे कायम।
राही फिरउसी मार्ग ही केहोगये युवक गण थे हमदम॥

(३८)

अट्ठाइस सन के माह सितम्बर में जलसा एक आम हुआ।
दिल्ली के किले पुराने में सारा साजो सामान हुआ॥
हर प्रान्तों से दो दो सदस्य प्रतिनिधि बन २ कर आये थे।
दो दिन तक होती सभा रही कई रेजुलेशन तै पाये थे॥

(३९)

आकर्षित इनने किया सबों को सोशलिस्ट सिद्धान्तों पर।
कर लिया हर एक को रजामन्द इसने अपनी बातों पर॥
और आल इण्डिया दल का भीथा इननेनाम बदलडाला।
सोशलिस्ट शब्दकी वृद्धि करी सारा प्रोग्राम बदलडाला॥

(४०)

छोड़ने की हत्या और डाके सबके विचार में बैठ गई।
काकोरी का परिणाम देख हर एक जिगर में पैठ गई॥
पर होनी तो होकर रहती ना पेश किसी की आती है।
इंशा को कर देती हैवाँ हैवाँ इन्शान बनाती है॥

(४१)

है सत्य इसी क्रम में फंस कर इंशाँ तकलीफ उठाते हैं।
सुख खोते हैं दुख पाते हैं मर जाते जान गवाँते हैं॥
भगतसिंह का भी यही हुवा मित्रवर हाल।
रस्ता अपना छोड़ कर फंसा बला के जाल॥

(४२)

एक कमीशन था यहां आया करने जाँच।
मेम्बर थे अंग्रेज ही केवल उसमें पाँच॥
इसी लिये था हिन्द में बहिष्कार का जोर।
शोक प्रदर्शन का उठा हर एक शहर में शोर॥

(४३)

वे कहीं अगर जाते तो काला झन्डा लोग दिखाते थे।
साइमन गोबैक के नारे से धरती आसमां डिगाते थे॥
लाहौर में तीस अक्टूबर को साईमन कमीशन आया था।
उसका ही बायकाट करना जनता ने दिल ठहराया था॥

[४४]

एक सौ चवालिस लगी हुई थी सब ही तौर मनाही थी।
पर इतने पर भी कर डाली जनता ने मन की चाही थी॥
इसही झगड़े में मुस्फक मन उस जाँपर लाठी चार्ज हुआ।
न्याय से अगर पूछो तो था यह अति ही निंदित कार्य हुआ॥

[४५]

लाला जी के थी चोट लगी हो कामों से लाचार गये।
इतना ही नहीं कुछी दिन में परलोक को आप पधार गये॥
इनका वदला लेने ही की सोची थी रिपब्लिक आर्मी ने।
और कुछ भी रखी नहीं कसर थी उसने अपनी करनी में॥

[४६]

शिवराम राजगुरू भगतशिंह आज़ाद को सौंपा काम गया।
और इनही लोगों के हाथों से पहुँचाया अंजाम गया॥
आगे इसके सुन लो श्रीमन काफी दिलचस्प कहानी है।
यातो यह हैंगा पागलपन याके जोशये जवानी है॥

[४७]

ठहराये जिम्मेदार गये सौंडर्स 'लाल' की सहादत को।
ये दुनियां से चाहते मिटाना थे ऐसी वद आदत को॥
एकरोज अचानक खवर मिली सौंडर्स ए. एस. पी. गये मारे।
ना पकड़ में कोई भी आया गये भाग सभी थे हत्यारे॥

(४८)

दुसरे दिन परचे दीवारों में चिपके पाये गये कई ।
उसमें लिक्खा था एक जान के बदले एक जान ले ली ।।
लालाजी का बदला पाया सौंडर्स जहाँ को छोड़ गया ।
बदजात बेईमां बदखशलत दुनियां से मुंह को मोड़ गया ।।

(४९)

छोड़ पहेली लो सुनो साफ साफ अहवाल ।
जैसा जो कुछ बताया मुखबिर जैगोपाल ।।
लाला जी की मृत्यु के बाद आतंकबाद के प्रेमी जन ।
उन पुलिस अफसरों से बदला लेने की इनने ठानी मन ।।

(५०)

आजाद राजगुरू भगतसिंह ने बदला मित्र चुकाया था ।
कर शाँतिप्रति हिंसाकी ज्वाला दिलका सबबैर चुकायाथा ।।
अतएव करके तैयारी सब बंगले पर जाकर पहुँच गये ।
पर लोक पढ़ा करके उसको अरमान सभी थे बुझा दिये ।।

(५१)

राजगुरू भगतसिंह भाग चले अंजाम काम अपना देकर ।
चल दिये हृदयकी जलनबुझा लालाजीका बदला लेकर ।।
गोली की जब आवाज सुनी तो मिस्टर फर्न वहां आये ।
करने को गिरफ्तार दोनों को पीछे थे इनके धाये ।।

(५१)

आज़ाद ने ऐसा देख हाल की फायर उन्हें बचा करके।
वह इतने ही में गये भाग कर अपनी जान बचा करके ।।
पर चाननसिंह पीछे न हटा वह अब भी पीछे आता था।
रोकना पकड़ना की आवाजों में चिल्लाता जाता था ।।

(५२)

लाचार उसे मारना पड़ा था अपनी जान बचाने को।
कुछ रोज और जीकर दुनिया में नाम अमर कर जाने को।।
भाग कर घुसे डी०ए०वी० के बोर्डिङ्गहाउस में वे जाकर।
फिर साइकिलोंपर चढ़ निकले और पहुँचे सीधे अपने घर ।।

(५३)

इनके जाने के बाद आगई पुलिस और तलाशी ली।
होगया घड़ी में घर स्वाहा और ढाई घड़ी में आंख खुली ।।
अब तो श्रीमती पुलिस ने भी बेहद उत्पात मचाये थे।
सड़कें स्टेशन मोटर के अड्डे हर एक घिरवाये थे ।।

(५४)

हर यात्री पर निगरानी थी की मुजरिम भाग न जाय कहीं।
और गिरफ्तार कर लेवें उसको जो कोई भी मिलजाय कहीं।।
वारंट भगतसिंहका निकला और पुलिसने संख्या वृद्धिकरी।
पर फिरभी इन अय्यारों से मुंह की थी उनने खाई खरी ।।

(५५)

तब भगतसिंह ने सोचा उपाय लाहौर से बाहर जाने का ।
और कार्यरूप में किया गया परणित मनतव्य दिखाने का ।।
और युक्ति भी काम आयगई और साफ यहाँ से निकल गये ।
और इंजानिब की नौकरशाही मन ही मन में विकल रहे ।।

(५६)

कैसे निकले लाहौर से ये कहिये तो ये भी बतलाऊं ।
अय्यारी भगतसिंह की का कुछ हाल यहाँ पर कह जाऊं ।।
खुद बन गये सरकारी अफसर लम्बा चौड़ा सा नाम धरा ।
अपने बंडलों व बक्सों पर उस नाम का लेबिल लगा दिया ।।

(५७)

साथ में एक औरत लेली तो कोई नहीं पहँचान सके ।
कौन है कहां का है क्या है यह ना कोई भी जान सके ।।
बन गये अर्दली राजगुरू वर्दी सब वहीं पहन करके ।
ले टिफिनकैरियर साथ चले श्रीभगतसिंह के बढ़ करके ।।

(५८)

ये तो दोनों यों निकल गये आजाद मगर है अभी यहीं ।
भक्तों के घर डेरा डाले हैं शेर आजकल यहीं कहीं ।।
चौबे बन कर एक यात्री दल जोड़ा जमना नहवाने को ।
पण्डे की हैसियत से रह कर संग सारे तीर्थ कराने को ।।

(५६)

उनके संग बाहर निकल गये ना पता किसी ने भी पाया।
और उन्हीं के संग में रह कर यह शेर बबर मथुरा आया॥
कैसी थी वह छतियां करिये इस पर गौर।
ऐसे मुश्किल वक्त पर निकल गये फिल फौर॥

(६०)

इसी शुभ समय में करूं प्रथम भाग सम्पूर्ण।
निष्कंटक ये हो गये पुलिस गर्व कर चूर्ण॥
बरणूं दुसरे भाग में देहली का बम केस।
बम फेंका एसेम्बली बीच बदल कर भेष॥

(६१)

दल की इज़्ज़त बढ़ गई सांण्डर्स हत्याकाण्ड हो जाने से।
और भी बढ़ गई सहानुभूति बदला 'लाला' का पाने से॥
दौलत हर ओर से बरस पड़ी ना अन्न कोई कंगाली थी।
क्रांति के कार्य से नहीं मित्रवर कोई बस्ती खाली थी॥

(६२)

जलसा कांग्रेस का इन्हीं दिनों कलकत्ते होने वाला था।
श्री बिजयकुमार सिंह को लेकर वहीं गया मतवाला था॥
बंगाल से सम्पर्क करने की इस शेर ने दिल में ठानी थी।
उनकी सुनता अपनी कहता फिरता हर ओर कहानी थी॥

(६३)

अनुभव कलकत्ते से ये हुवा कि बम की सख्त जरूरत है ।
शुहरत हासिल होवे जग में बढ़ जाये दल की इज्जत है ॥
वह सोच बनाना बम का सीखा इन जाँबाज दिलेरों ने ।
व्यौहार में लाकर देख लिया बम एक बना कर शेरों ने ॥

(६४)

झांसी जा करके की ट्राई और था इसको सच्चा पाया ।
लाहौर सहारनपूर आदि में था फैक्ट्री को फैलाया ॥
धूम से लगे थे बम बनने साखा हर जाँ में फैलाई थी ।
भारत के काफी शहरों में अपनी बातें फैलाई थी ॥

(६५)

८ अप्रैल उन्नतिस को फेंका दिल्ली में इनने बम आकर ।
दिखलाई शूरवीरता थी ऐसेम्बली के भीतर जाकर ॥
भर गया धुयें से कमरा सब दो बेंचें चकनाचूर हुईं ।
ना चोट किसी के और लगी थी सतह जरा सी फूट गई ॥

(६६)

नौकर चाकर मेंबर सारे इत उत को भागे फिरते थे ।
पड़ते थे पांव ठीक से ना एक एक के ऊपर पड़ते थे ॥
पर कुछ मेंबर ऐसे भी थे जो जगह पे अपने डटे रहे ।
नेहरू मालवी क्रेरर आदिक हुल्लड़बाजों से हटे रहे ॥

(६७)

इस वखत चाहते अगरचे ये भगने का काफी टाइम था।
था गिरफ्तार लेकिन होना किस काम का बाकी टाइम था॥
था सोच समझ कर काम किया ना हुई हत्या बेचारों की।
परचे बाँटे स्पीचें दीं दी बता राह सरदारों की॥

(६८)

गोलियाँ तमंचे फेंक दिये जान करके आत्म समपर्ण की।
ज़िन्दगी मौत पर खेल गये जिन्दगी पुलिस को थी दे दी॥
जयघोष किया भारत माँ का इनकलाब जिन्दाबाद कहा।
और हाथ बढ़ा करके आगे जेलों का जेवर पहन लिया॥

(६९)

थे भगतसिंह गिरफ्तार हुए और बी० के० दत्त असीर हुए।
दोनों ही शेर बहादुर या समझो कैदे जंजीर हुए॥
दो कानिस्टेबिल बढ़े आगे दोनों शेरों को बांध लिया।
फिर दोनों ने जयघोष किया इनक़लाब जिन्दाबाद कहा॥

(७०)

साम्राज्यवाद का नाश होय यह उनका प्यारा नारा था॥
जो चलते वक्त असेम्बली अन्दर भगतसिंह ने मारा था।
क्षण भर में हवा ये फैल गई भारत के हर एक कोने में।
पत्रों के विशेषाँक निकले थे गिरफ्तारियां होने में॥

(७१)

देहली की जेल में जल्दी से इनको था पुलिस ने पहुँचाया।
सर्दार भगतसिंह पकड़ गये ये हर एक के मुंह पर आया॥
उन्ही दिनों की बात ये सुनो बन्धु चितलाय।
होकर यहां प्रसंगवश आपको दूं बतलाय॥

(७२)

इत श्री युक्त आजाद ने रचा नया खड़यंत्र।
मुजरिम करने को रिहा रचे अनोखे यंत्र॥
सोचा ये गया शाम को जब कोर्ट से जेल मुलजिम आवें।
कुछ दूर ही रहकर बजा बांसुरी को संकेत किये जायें॥

(७३)

लग जाये मोटर एक ओर तैय्यार रहे वह चलने को।
मुलजिम आते ही ले भागे सोची यह राह निकलने को॥
पर इतने में क्या होता था वहां सिपाहियों से पाला था।
जो ग्रूप भगतसिंह बी०के० दत्त के साथ रहे रखवाला था॥

(७४)

कैसे वह उनको छोड़ेगा ये बात अभी तै करनी थी।
क्योंकी उन बंदूकों के आगे इन्हें लड़ाई करनी थी॥
सोचा आखिर ये गया होवे गैस प्रयोग।
लेकिन यह बेकार था हुवा सभी उद्योग॥

(७५)

भगतसिंह का पत्र एक आया इसके पास ।
इनके इस षड़्यन्त्र का किया किसी ने नाश ॥
लिक्खा था करो न कुछ कोशिश श्रीमान हमें छुड़वाने की ।
हमने तो ठानी है दिल में बस एक बात मर जाने की ॥

(७६)

ऐसा हो जाने से दल का कुछ सोचो काम बढ़ेगा ही ।
भारत के युवकों के दिल में कुछ तो उत्साह चढ़ेगा ही ॥
सोचो तो होगा कौन भला हम दोनों के छुट जाने से ।
संगठन कार्य कुछ और आगे आये अपने मर जाने से ॥

(७७)

आजाद को जब यह पत्र मिला लाचार बिचार बदल डाले ।
लाचार छुड़ाने को बन्दी सब दिल से ख्याल भुला डाले ॥
इसके अतिरिक्त जेल जीवन की घटना एक बताऊंगा ।
है ये भी बात महत्व पूर्ण इसलिये जिक्र कर जाऊंगा ॥

(७८)

कैदी लोगों पर वहां होते अत्याचार ।
देख भला सकते थे कब ये ऐसे व्योहार ॥
अतएव अनशन व्रत धार लिया ना खाना कोई खाते थे ।
मकसद गर पूछो तो अपना वह जेल सुधार बताते थे ॥

(७६)

और भी कई कैदी वहाँ पर अनुकरण लगे इनका करने ।
और जनता भी हाँ हाँ कहकर दम लगी खूब उनका भरने ।।
सैकड़ों रोज हड़ताल चली ना किसी ने खाना खाया था ।
और इसी तरह भूखे रहकर कइयों ने प्राण गवाया था ।।

(८०)

आखिर जब बहुत रोज बीते तो कुछ शर्तें मंजूर हुईं ।
अनशन बृत भंग किया इनने शेरी कुछ इन्हें जरूर हुईं ।।
ऐसे ही बन्दी रहकर भी सदा भलाई करते थे ।
अत्याचारों की बन्दीगृह मेंभी ये बुराई करते थे ।।

(८१)

होता था मुकदमा रोज कचहरी रोज जेल से जाते थे ।
रस्ते में आजादी के सच्चे वीर तराने गाते थे ।।
बरसों इस क्रम से चला मुकदमा हुक्म के दिन फाँसी पाई ।
लाखों ही रुपये खर्च किये सरकार आलिया ने भाई ।।

(८२)

कहती थी खर्च हो रहा है ये सब सफाइयाँ दिलवाने में ।
रुपया पानी सा फेंक रही थी डाले हाथ खजाने में ।।
पर माले मुफ्त बेरहम दिल चरितार्थ कहावत होती थी ।
भारत से ही रुपया लेकर बेकार बेमतलब खोती थी ।।

(८४)

फिर भी वह सजा बहाल रही ना कुछ भी कम करवा पाये।
नकीतो भाग्य रेख करके कोशिश भी नहीं मिटा पाये ॥
जनता ने यह सुन किया आन्दोलन एक साथ।
निन्दा के प्रस्ताव की शुरू हुई बर्सात ॥

(८५)

सोचा प्रिवी कौंसिल जावे करी अपील।
और फांसी की मुखालफत में दी जाय दलील ॥
सन्धी होने से रुका लेकिन यह सब काम।
बन्द एकदम होगया छुड़वाने का काम ॥

(८६)

स्मरण और भावनायें थोड़ी आप को बताऊँगा।
वह कैसा था क्या रखता था भावना वही समझाऊँगा॥
सुन्दर था भावुक आदत थी दिल सहानभूति थी भरी हुई।
नास्तिक मत साहित्यकरुचि उसके दिमाग में थी भरीहुई॥

(८७)

कुछ दिन तो त्रासावादी था फिर सम्यवाद में आया था।
और मरते दम तकरहा वही ना दिल का ख्याल भुलाया था॥
लो अब सवाल यह आता है फिर फेंका था क्यों बम उसने
अब हत्यासे मुंह मोड़ लिया गमख्वार और हमदमउसने ॥

(८८)

इसका जवाब इतना ही है उनकी बातों पर गौर करो ।
क्या कहाथा असेम्बली के अन्दर उन बातोंका ध्यान करो ।।
आपकी सरलता के बायस मैं नोट यहां पर करता हूँ ।
आपकी सभी शंकाओं का मैं समाधान यहां करता हूँ ।।

(८९)

उनने ये कहा था बहरों को जोर से सुनाया जाता है ।
भूले भटकों को ऐसे ही सदमार्ग बताया जाता है ।।
मेम्बरों से कहा था ऐसे क्यों वक्त खराब कर रहे हो ।
निकलो चलो अब बाहर आवो क्या इसजा आप भररहेहो

(९०)

ये काम करन का क्षेत्र नहीं बाहर आवो सङ्गठन करो ।
मजदूरों औरकिसानों को ला एक जगह पर सङ्गठनकरो ।।
फिर इस कुरसी पर तो खुदही लो आप बिठाये जायेंगे ।
सीढ़ी सीढ़ी ऊपर आवो सब काम ठीक हो जायेंगे ।।

(९१)

और आज बात वह सत्य हुई जो कही भगतसिंहने हमदम ।
हिन्द के नौ प्रान्तों में है कांग्रेस की बजारत कायम ।।
और इसीलिये तो उसने बम हरएक को बचाकर डालाथा
था पड़ा तमञ्चा जेब मगर ना उसको हाथ सम्हाला था ।।

(६२)

अबतो शायद यह बहम आपके निकल गया होगा दिलका।
अबतो मन्तव्य आगया होगा समझ आपको आक्लि का ॥
ये किया किसलिये था उनने मालूम होगया यह भी तो।
फिर कहां रहा त्रासावादी कुछ अपने मुंह से बोलो तो ॥

(६३)

छोड़ूँ अब इस जिक्र को कहूँ गरज की बात।
हुआ किस तरह मित्रवर था इनका अपघात ॥
मोरख तेइस मार्च थी था इकतिस का साल।
मिली इन्हें फाँसी सुजन किया गया बदहाल ॥

(६४)

जो कुछ मिलाप में छपी खबर थी वह आपको बताता हूँ।
पद्यानुवाद करके उसका आपको जताता हूँ ॥
था ठीक शामका सात बजा फन्दाथा भगतसिंह के डाला।
और झूला फांसी के झूले सरदार भगतसिंह मतवाला ॥

(६५)

मरने के पहले बिदा लई हमदम हमराहों से उसने।
डाउन डाउन विद यूनियन जैक की सदा लगाई इसने ॥
बदले में सभी कैदियों ने भगतसिंह जिन्दाबाद कहा।
भारत माँ का जय घोष किया इन्कलाब जिन्दाबाद कहा ॥

(९६)

बाद में भगतसिंह के था श्रीयुत राजगुरू को लटकाया।
सबके पीछे सुखदेव राज को मुल्कअदम था पहुँचाया ॥
जाने आखिरी क्रिया कैसे थी हुई वीर दीवानों की।
नामालुम मुझको किनने की अन्त्येष्टि क्रिया परमानोंकी ॥

(९७)

दूसरे दिन प्रातःकाल हरेक सड़कों पर नोटिस लगा था ये।
यह लिक्खा था तीनों फाँसी के ऊपर लटका दिये गये ॥
सतलज के किनारे लाश जलादी खाक बहा दी पानी में।
बस इससे ही समझ लीजिये मुश्किल या आसानी में ॥

(९८)

पर पारवती का कहना था की लाश जलाई गई नहीं।
क्योंकि कुछ टुकड़े मिले थे नदी किनारे कहीं वहीं ॥
लारी में भर लाहौर उसे श्रीमती पार्वती ले आईं।
उनकाही निकला था जुलूस उनकी हीथी क्रिया करवाई ॥

(९९)

लाखों नर नारि साथ में थे नंगे पावों और नंगे सर।
इनहीं का जिक्र हो रहा था चारसू दरबदर और घर घर ॥
लाखों की भीड़ें घाट तलक इनको पहुँचाने आई थीं।
या यो कहिये सबने मिल करके इनको दई बिदाई थीं ॥

(१००)

पर कहना था सरकार का ये की सब बातें ठाली है।
थी हुई नहीं आखिरी क्रिया यह बात तर्क से खाली है॥
है कहना साढ़े आठ बजे लारी पर लाश निकाली थी।
दो लारी में लकड़ियां भरी थीं और पुलिस रखवाली थी॥

(१०१)

गण्डासिंह वाला में जाकर दो पण्डित गये बुलाये थे।
उनसे ही परामर्श लेकर के सारे काम कराये थे॥
पौने बारह पर दाह हुआ और चार बजे तक लाश जली।
और फिरोजपुर बृज के करीब जाकर के राख बहाय दई॥

(१०२)

हैं सत्य कौन सी बातें इसमें कैसे अब बतलायें हम।
किसको सच्चा किसको झूठा बिन समझे में कह जायें हम॥
विश्वमित्र अखबार में किशनसिंह सरदार।
जीवन घटना इस तरह छपवाई थी यार॥

(१०३)

उसका भी अनुवाद अब पढ़िये करके गौर।
काम किये थे भगतसिंह कौन कौन किस तौर॥
उनइस सौ सात में जन्म हुआ छाई घर में खुशियाली थी।
और बाल चरित्र देख उनके सबको खुशहाली होती थी॥

NATIONAL LIBRARY
254
6.12.71

(१०४)

थे तीन बरस के तब उनने गायत्री मंत्र को याद किया।
अच्छे २ विद्वानों को सोचिये था उनने मात दिया ॥
खेलते थे खेल दिलेराना नेतृत्व बालकों का करते।
करते थे कल्पित किले फतह थे आपस में लड़ते मरते ॥

(१०५)

एक रोज किसी ने पूछा था होकर तुम बड़े करोगे क्या।
तो तुतली बोली में बोले मैं करूंगा बन्दूकें बेचा ॥
भोगा वाला दादी ने इनका नाम प्यार से डाला था ॥
चाचा ने इनको प्यार सहित बचपन में पोषा पाला था ॥

(१०६)

प्रारम्भिक शिक्षा गांव में ही रह करके इतनी पाई थी।
डी. ए. बी. और नेशनल कालेज में बाकी शिक्षा पाई थी ॥
जितना इनने अनुभव पैदा कर लिया न कर सकता कोई।
जितना था इनने पढ़ डाला ना इतना पढ़ सकता कोई ॥

(१०७)

नेशनल क्लब के ऐतहासिक नाटक में लेते थे भाग सदा।
अभिनय की कला दिखा जाते थे जनता को ये यदाकदा ॥
नौजवान भारत सभा के भी तो येही बनाने वाले थे।
राष्ट्रीय कार्य संगठन हेतु जाने क्या २ कर डाले थे ॥

(१०८)

शादी की चरचा सत्ताइस की साल छिड़ी थी जब घरमें ।
तो जान बचाकर भाग आये थे प्रियवर आप कानपुरमें ॥
आकर विद्यार्थी जी के संग बलवन्त नाम से काम किया।
अनुभवी लेख निकले प्रताप कितने ही कर नाम लिया ॥

(१०९)

गंगा जमुना में उसी साल आई थी बाढ़ प्रलयकारी ।
तो और साथियों के संग में थे काम किये बहु हितकारी ॥
कुछ रोज कानपुर के कोई विद्यालय में हेडमास्टर थे ।
और कार्य बहुत से गुमनामी में करते रहे बराबर थे ॥

(११०)

दिल्ली भी काफी रोज रहे पर भेद किसी ने ना पाया ।
और १९२९ की साल बम केस ऐसेम्बली करवाया ॥
दिल्ली लाहौर के मुकदमे में श्री भगतसिंह फांसी पाई ।
बेकार और बेमतलब में थी अपनी गर्दन कटवाई ॥

(१११)

जो होना था हो गया छोड़िये अब इन सारी बातों को ।
मकसद मेरा सुनिये क्यों मैंने अयां किया जजबातों को ॥
मेरा मतलब यह है कि गर ये शाँति मार्ग पर डट जाते ।
तो इतनी ही बातों में बेकार गले क्यों कट जाते ॥

(११२)

कुछ करके काम दिखाते ये और नाम जहां में कर लेते ।
और मातृभूमिके दुख शायद इस मार्गपे चलकर हरलेते ॥
इसीलिये मैं आपसे विनय करूं कर जोर ।
मत अपनाना कोई भी इनके ऐसा तौर ॥

(११३)

जो कुछ करना आपको काँगरेस के साथ ।
रहकर करिये मित्रवर तो कुछ आवे हाथ ॥
खतम फिसाना मैं करूं अब इस ही स्थान ।
बोलो मित्रो प्रेम से जै २ हिन्दुस्तान ॥

❀ इति ❀

पुस्तक मिलने का पता:—

बम्बई पुस्तकालय,
जगदीश ग्रन्थमाला कार्यालय,
चौक—कानपुर ।

किताबों की बड़ी दूकान

बम्बई पुस्तकालय

चौक कानपुर ।

हमारे यहां बम्बई, बनारस, लखनऊ, गीता प्रेस, कलकता, मथुरा, बरेली, हाथरस, आदि सब जगहों की पुस्तकों का भरपूर स्टाक काफ़ी तादाद में रहता है ।

अतएव पुस्तक विक्रेताओं तथा पुस्तक प्रेमियों से प्रार्थना है कि एक बार पुस्तक ख़रीद कर परीक्षा करें ।

मैनेजर—

स्व०—गङ्गानारायण शुक्ल उर्फ़ (मानबाबू)

मुद्रक—पण्डित रामेश्वरप्रसाद पाण्डेय,

'सुरसरि' प्रेस, कानपुर ।